चित्रलेखा उपन्यास के आधार पर बीजगुप्त का चरित्र-चित्रण कीजिए का अंशांश

प्राध्यापक - डॉ० सतीश चन्द्र पाठक, हिन्दी विभाग
एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद।

पाता।

(iii) महान भोगी:-

बीजगुप्त परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों से परिचालित है। प्रथमतः तो वह भोग-विलास में आकंठ निमग्न, दीन-दुनिया से बेपरवाह अपने में मगन है। उसे अपने जीवन के अतिरिक्त किसी की चिंता नहीं है। समाज के प्रति भी उसका कोई दायित्व है, ऐसा उसके क्रिया कलापों से दिखलाई नहीं पड़ता। सौन्दर्य, मदिरा

और उनका अनुरक्त भोग ही उसके जीवन का उद्देश्य प्रतीत होता है। चित्रलेखा के प्रति उसके मन में अपार प्रेम है। उसके अभाव में उसके जीवन की कल्पना भी असंभव है। उसके हृदय में वासना की ऐसी आँधी चल रही है जो कभी शान्त ही नहीं होती। चित्रलेखा अपने रूप-सौन्दर्य से उसकी वासना को और भड़काती रहती है किन्तु जैसे ही चित्रलेखा योगी कुमारगिरि से दीक्षा लेने उसकी कुटिया में चली जाती है, बीजगुप्त का सहज अनुरागी मन विराग की ओर उन्मुख होने लगता है। वह प्रेमी है व्यभिचारी नहीं है। तभी तो यशोधरा का रूप-सौन्दर्य उसे प्रभावित नहीं कर पाता। यशोधरा उसके जीवन में आने के लिए उसकी अनुमति की प्रतीक्षा करती है, एवं उसके पिता सामन्त मृत्युंजय उससे यशोधरा के पाणिग्रहण का बार-बार आग्रह करते हैं, किन्तु वह अपने स्थान पर अडिग रहता है। जब श्वेतांक यशोधरा से विवाह की इच्छा व्यक्त करता है तब बीजगुप्त स्वयं सामन्त मृत्युंजय से श्वेतांक के लिए यशोधरा का हाथ मांगता है। किन्तु मृत्युंजय द्वारा यह कह कर कि श्वेतांक के पास धन एवं पद नहीं है - उसके प्रस्ताव को अस्वीकार किए जाने पर बीजगुप्त अपना सर्वस्व श्वेतांक को दान कर देता है और दोनों के पाणिग्रहण संस्कार का मार्ग प्रशस्त करता है।

अपना सर्वस्व त्यागकर दूसरे को सुखी बनाने का यह दृष्टान्त बीजगुप्त को मानव से अतिमानव या महामानव की भूमिका में अवस्थित कर देता है। एक ओर चरम विलास एवं भोग की प्रवृत्ति दूसरी ओर त्याग की चरमावस्था कि अपने लिए कुछ भी नहीं रखना और भिक्षुक बनकर गृहत्याग कर देता है ताकि श्वेतांक-यशोधरा सुखी जीवन जी सकें। उधर चित्रलेखा के पुनरागमन पर उसे क्षमा भी कर देता है और उसके द्वारा निवेदित सम्पदा को भी यह कह कर ठुकरा देता है - "मैंने वैभव छोड़ा है अपनाने के लिए नहीं। उसे सदा

के लिए छोड़ने के लिए।"

इस प्रकार बीजगुप्त के व्यक्तित्व में प्रेम एवं त्याग का ऐसा सात्विक भाव है जो उसके चरित्र को न केवल श्रेष्ठता एवं उज्ज्वलता प्रदान करता है बल्कि सार्थकता भी प्रदान करता है। इस उपन्यास में बीजगुप्त नायकत्व की कसौटी पर खरा उतर कर मानवीय उत्थान एवं गरिमा का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है और उपन्यास के पाठकों के मन में अविस्मरणीय पात्र के रूप में स्थापित हो जाता है।

— x —

आलोचनात्मक प्रश्न —

1. बीजगुप्त का चरित्र-चित्रण कीजिए।
2. चित्रलेखा उपन्यास के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख
3. बीजगुप्त के चरित्र में परस्पर विरोधी भावों का संयोग है। स्पष्ट करें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. बीजगुप्त किस राज्य का सामन्त था? (i) पाटलिपुत्र (ii) वैशाली (iii) मगध
2. बीजगुप्त की प्रेमिका कौन थी- (i) यशोधरा (ii) आम्रपाली (iii) चित्रलेखा
3. चित्रलेखा किस राज्य की राजनर्तकी थी (i) मगध (ii) नालंदा (iii) पाटलिपुत्र
4. चित्रलेखा के चले जाने के बाद बीजगुप्त कहां की यात्रा करता है —
   (i) हरिद्वार (ii) अयोध्या (iii) काशी
5. काशी यात्रा में उसके साथ कौन सा सामन्त साथ गया था —
   (i) चाणक्य (ii) मृत्युंजय (iii) योगकुमारगिरि
6. श्वेतांक का विवाह किसके साथ हुआ था —
   (i) चित्रलेखा (ii) यशोधरा (iii) आम्रपाली